अध्याय 5

चैत्य स्थापत्य

अध्याय 5

चैत्य स्थापत्य

जैसा कि पूर्व में भोंगापाल की स्थिति के बारे में अध्याय 3 के खण्ड (2) ब में उल्लेख किया जा चुका है कि ग्राम भोंगापाल में तीन समूहों में मलवा सफाई कार्य के दौरान स्थापत्य संरचनायें प्राप्त हुई थी। इनमें से टीला क्रं. (II) एवं (III) में शिव मंदिर के ध्वंशावशेष प्राप्त हुये हैं जिनका विवरण पूर्व में दिया जा चुका है। शेष टीला क्र. I पर बुद्ध प्रतिमा तथा ईंट निर्मित चैत्य गृह प्राप्त हुआ है जिसका वर्णन इस अध्याय में किया जा रहा है।

भोंगापाल में प्राप्त चैत्यगृह का विस्तृत वर्णन जी.के.चन्दौल[1] तथा नरेश कुमार पाठक[2] ने अपने लेखों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

ग्राम भोगांपाल के बुद्ध प्रतिमा वाले टीले पर मलवा सफाई कार्य के पूर्व एक बुद्ध की प्रस्तर प्रतिमा सतह पर रखी हुई थी। इस प्रतिमा के स्थित होने की जानकारी वी.डी.झा[3] ने अपने पुस्तक में दी है। यह टीला शिवमंदिर क्र.- I के पश्चिम दिशा में नाले के किनारे स्थित है। मलवा सफाई कार्य पूर्व यह टीला आयताकार था। इस टीले की पूर्व-पश्चिम में लम्बाई 36 मीटर तथा उत्तर-दक्षिण दिशा में चौड़ाई 34 मीटर तथा टीले की ऊंचाई 5.50 मीटर थी।[4] नरेश कुमार पाठक [5] ने भी इस टीले की लम्बाई उतनी ही अंकित किया है। इस टीले की मलवा सफाई कार्य पश्चात् एक चैत्य गृह प्रकाश में आया है जो ईंट निर्मित है। इसका विवरण निम्नानुसार है।

बौद्ध चैत्य-विहार

इस चैत्य-विहार का निर्माण परम्परागत गुप्तकालीन मंदिर निर्माण शैली के अनुरूप एक ऊंचे चबूतरे पर किया गया था। ईंट निर्मित यह चबूतरा आयताकार है जिसकी पूर्व-पश्चिम में लम्बाई 29 मीटर तथा उत्तर-दक्षिण में चौड़ाई 19 मीटर तथा ऊंचाई 1.50 मीटर है। पाठक [6] ने इस चबूतरे की लम्बाई 28 मीटर, चौड़ाई 19 मीटर तथा ऊंचाई 1.70 मीटर दर्शाया है। चैत्यगृह पूर्वाभिमुखी है। चबूतरे अथवा जगती के ऊपर निर्मित चैत्यगृह में भू-विन्यास में अर्द्ध वृत्ताकार (Apsidal) देवपीठिका, प्रदक्षिणपथ, मण्डप तथा चारों तरफ आयताकार संलग्न पार्श्व कक्ष महत्वपूर्ण अंग हैं। इनका विस्तृत

विवरण अलग-अलग निम्नानुसार है :-

देव पीठिका या गर्भगृह :-

गर्भगृह का आकार अर्द्ध वृत्ताकार अर्थात् घोड़े की नाल के आकार का है। इसके पूर्वी दिशा में एक प्रवेश द्वार है जो 2.10 मीटर चौड़ा है। इस प्रवेश द्वार के दोनों पार्श्व में नीचे की तरफ भित्ति में एक फीट का गड्ढा होने से अनुमान लगाया जाता है कि यहां पर द्वार चौखट लकड़ी की रही होगी जो बाद में गल गई होगी जिससे गड्ढा बन गया।

देव पीठिका के सामने का भाग पूजा गृह कहलाता है। इसकी लम्बाई 3.20 मीटर तथा चौड़ाई 2.80 मीटर है। यह स्थल बौद्ध भिक्षुओं के लिये पूजा-अर्चना करने के लिये प्रयुक्त होता रहा होगा। इसके पीछे का अर्द्ध वृत्ताकार भाग 70 सेमी. ऊंचा है जिसमें देव पीठिका निर्मित है। यह 2.80 मीटर चौड़ी है। गर्भगृह की भित्ति की मोटाई 1.10 मीटर है तथा अवशिष्ट दीवाल की अधिकतम ऊंचाई 1.65 मीटर है।[7] वर्तमान में इस देवपीठिका पर भगवान बुद्ध की प्रतिमा भू स्पर्श मुद्रा में प्रतिष्ठापित है, जो क्षरित है।

प्रदक्षिणा पथ :-

चैत्य गृह का प्रदक्षिणा पथ आयताकार निर्मित है। प्रदक्षिणा पथ की भित्तियों की पूर्व -पश्चिम में लम्बाई 12 मीटर तथा उत्तर दक्षिण में चौड़ाई 8.50 मीटर है। प्रदक्षिणा पथ में प्रवेश करने के लिये चारों दिशाओं में एक-एक द्वार बने हैं। पूर्व दिशा का द्वार मण्डप से तथा शेष तीनों दिशाओं के द्वार पार्श्व बरामदों से संलग्न हैं। प्रदक्षिणा पथ के पूर्वी द्वार की भित्तियां 1.00 मीटर मोटी हैं। प्रदक्षिणा पथ 1.90 मीटर चौड़ा है। इसके दक्षिण-पश्चिम एवं उत्तर-पश्चिम कोने में गर्भगृह की पिछली भित्ति के अर्द्ध वृत्ताकार निर्मित होने के कारण इसकी चौड़ाई 3.70 मीटर है। इसके पूर्वी द्वार की चौड़ाई 1.80 मीटर तथा दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर दिशा के द्वार की चौड़ाई 2.70 मीटर है। प्रदक्षिणा पथ की दक्षिणी द्वार के बाये तरफ 4.65 मीटर लम्बाई में ईंट निर्मित भित्ति, सपाट है अर्थात् भित्ति निर्मित नहीं है जबकि द्वार के दायें तरफ ईट निर्मित भित्ति विद्यमान है। जी.के.चन्दौल[8] के मतानुसार इस पट्टी पर दो काष्ठ स्तंभ रहे होगें जिनके नीचे प्रयुक्त होने वाली पकी मिट्टी से बनी अर्द्ध कुम्भियां और कीलों के टुकड़े प्राप्त हुये हैं। प्रदक्षिणा पथ की शेष अवशिष्ट दीवालों की ऊंचाई 1.50 मीटर तथा मोटाई 1.00 मीटर है।

बरामदें एवं पार्श्व कक्ष :-

प्रदक्षिणा पथ के तीन तरफ अर्थात् उत्तर, दक्षिण एवं पश्चिम दिशा के प्रवेश द्वार के सामने चबूतरे पर बरामदें प्राप्त हुये हैं। बरामदों के द्वार से सम्बद्ध कुल छह कमरों के अवशेष प्रकाश में आये हैं। उत्तर दिशा में बरामदा के दाये तथा बायें तरफ एक-एक आयताकार कमरे बने हैं। प्रत्येक कमरे की

लम्बाई 3.20 मीटर तथा चौड़ाई 2.50 मीटर है। इसी आकार का दूसरा कमरा भी है। दोनों कमरों की सामने की आधी एवं उत्तर दिशा की भित्तियां नष्ट हो चुकी हैं। दक्षिण दिशा में भी इसी प्रकार के दो कमरे हैं जिनका माप इसी प्रकार है। इस कमरे के सामने की एवं दक्षिण दिशा की भित्तियां नष्ट हो चुकी हैं। चैत्यगृह के पिछले भाग में भी बरामदे से संलग्न दो कमरों के अवशेष निकले हैं। प्रत्येक कमरे की लम्बाई पांच मीटर तथा चौड़ाई 2.50 मीटर है। ये दोनों कमरे आयताकार है तथा इन दोनों का माप बराबर है। कमरों के सामने की भित्तियां दक्षिण दिशा की तरफ आधी-आधी नष्ट हो चुकी हैं। ची.के.चन्दौल[8] के मतानुसार इन कमरों में बौद्ध भिक्षु निवास करते रहे होगें। दण्डकारण्य जैसे वनांचल में भोंगापाल का यह ईंट निर्मित चैत्यगृह महत्वपूर्ण है जो कि उत्तरापथ एवं दक्षिण पथ को जोड़ता रहा होगा। इसी प्रकार विदर्भ तथा कलिंग भी इस स्थल से जुड़े रहे होगें।

मण्डप :-

चैत्यगृह के प्रदक्षिपा पथ के पूर्वी भाग में इसका मण्डप निर्मित है जो आयताकार है। मण्डप की लम्बाई 3.90 मीटर तथा चौड़ाई 1.25 मीटर है। पूर्व दिशा की तरफ मण्डप के सामने 70 सेमी. मोटी ईंट निर्मित दीवाल की पट्टी है। पाठक[9] के मतानुसार यहां पर दीवार का निर्माण नहीं किया गया था तथा मण्डप में प्रवेश करने के लिये खुले द्वार के रूप में इसका प्रयोग होता रहा होगा। मण्डप की शेष भित्तियों की ऊंचाई 1.30 मीटर तथा मोटाई 1.50 मीटर है। मण्डप की भित्तियां सादी है। मण्डप से प्रदक्षिणा पथ में प्रविष्ट होने के लिये एक पूर्वाभिमुख द्वार है जिसकी चौड़ाई 1.80 मीटर है।

मण्डप के सामने चबूतरे पर ईंट निर्मित पक्का फर्श, मण्डप की बायें तरफ की भित्ति से सटकर बाहर की तरफ निर्मित है जो पानी के बर्तन (घड़े) आदि रखने के लिये निर्मित किया गया होगा। मण्डप के सामने निर्मित चबूतरा 19 मीटर चौड़ा तथा 7 मीटर लम्बा है तथा चबूतरे के ऊपर मण्डप से लगे हुये ईंट निर्मित फर्श की लम्बाई चार मीटर तथा चौड़ाई सात मीटर है।

बुद्ध प्रतिमा :-

यह प्रतिमा 1.30 मीटर ऊंची, 1.20 मीटर चौड़ी तथा 35 सेमी. मोटी है। प्रतिमा भू स्पर्श मुद्रा में स्थापित है। वर्तमान में यह प्रतिमा भोगापाल स्थित चैत्यगृह के देवपीठिका पर स्थापित है। प्रतिमा के पादपीठ का आकार 0.50x1.10x0.25 मीटर है। इस प्रतिमा की दोनों भुजायें कलाई से खण्डित हैं। बायें हाथ की हथेली वाला भाग अप्राप्त है लेकिन दायें हाथ की हथेली वाला भाग टूटा हुआ प्रतिमा के पास रखा है। इसको जोड़कर देखने से अभय मुद्रा में होने की जानकारी मिलती है। बायीं भुजा भू स्पर्श मुद्रा में निर्मित रही होगी। बुद्ध प्रतिमा पद्मासन में ध्यानस्थ मुद्रा में बैठी है जिससे घोर तपस्यारत होने के

कारण बुद्ध प्रतिमा का पेट (उदर) अंदर की तरफ घंसा हुआ दिखाई पड़ता है। बुद्ध के सिर के पीछे गोलाकार प्रभावली है जो अलंकरण विहीन अर्थात् सादी है। प्रतिमा का मुख गोलाकार है जिसके नाक, कान तथा माथे को ग्रामवासियों द्वारा घिसकर गड्ढा कर दिया गया है। प्रतिमा के बायें कंधे से नीचे की तरफ तिरछा कपड़े का फेटा बंधा हुआ स्पष्ट दिखाई पड़ता है। प्रतिमा के कर्ण प्रलम्ब है तथा अर्द्ध निमीलित नेत्र एवं सौम्य मुखमण्डल इस प्रतिमा पर आध्यामित्क प्रभाव परिलक्षित करता है। इस प्रतिमा का काल जी.के. चन्दौल[10] ने 5–6 वीं शती.ई. तथा वी.डी.झा[11] ने छठवीं शती ई.माना है।

छठवीं शताब्दी के पूर्व केवल चैत्य गृह ही अर्द्धवृत्ताकार निर्मित किये जाते थे लेकिन इसी क्रम में मंदिरों के विकास के साथ इनका गर्भगृह भी अर्द्ध वृत्ताकार निर्मित किया जाने लगा। जी.के.चन्दौल[12] के मतानुसार महाराष्ट्र के टेर नामक स्थान में ईंट निर्मित गजपृष्ठाकृति मंदिर निर्मित है जो मूलतः बौद्ध चैत्य हाल था तथा इसका स्वरूप बदलकर त्रिविक्रम मंदिर बना दिया गया। टेर का मंदिर 5 वीं शती ई.का है। इसी प्रकार दक्षिण भारत में एहोल में चालुक्य शासकों के काल में निर्मित दुर्गा मंदिर का गर्भगृह भी गजपृष्ठाकृति आकार में निर्मित है तथा इसमें प्रदक्षिणापथ भी निर्मित है। इस मंदिर का अधिष्ठान भाग भी गजपृष्ठाकृति निर्मित है। अतः चन्द्रौल के मतानुसार भोगांपाल का ईंट निर्मित चैत्यगृह दुर्गामंदिर के समकालीन होगा। पर्शी ब्राउन के मतानुसार दुर्गा मंदिर, बुद्धिस्ट चैत्य गृह का मिलता–जुलता रूप है जो भारत में असमान्य नहीं है। इस प्रकार के उदाहरण टेर में भी है। पर्शी ब्राउन ने दुर्गामंदिर का काल 6 वीं शती ई. माना है। इसके अलावा कृष्णदेव[14], ए.के.कुमारस्वामी[15] ने भी दुर्गामंदिर को 6 वीं.शती ई. में निर्मित माना है। अतः यह चैत्य गृह 6 वीं. शती ई.में निर्मित प्रतीत होता है।

सन्दर्भ

(1) जी.के.चन्दौल, *भोगापाल (जिला बस्तर) का इष्टिका चैत्यगृह एवं प्राचीन मंदिर*, हेरिटेज आफ इण्डिया : पास्ट एण्ड प्रजेन्ट, (इस्से इन ऑनर आफ प्रो.आर.के.शर्मा), वा. II, क्र.–51 (सम्पादक–पी.के.मिश्रा एवं एस.के.सुब्रेरे), आगम कला प्रकाशन दिल्ली, 1994 पृ. 301–304.

(2) नरेश कुमार पाठक [10] " *भोंगापाल का नलयुगीन बौद्ध चैत्यगृह एंव हिन्दू मंदिर* ", द बाऊन्टीअस ट्रीट्रेजर्स इन इण्डियन आर्ट एंड कल्चर, (होमेज टू डॉ. एच. वी. त्रिवेदी), वाल्यूम– II , (सम्पादक– कल्याण कुमार चक्रवर्ती), शारदा पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1977, पृ.569–570 .

(3) वी.डी.झा, "बस्तर का मूर्ति शिल्प" , भोपाल, 1989, पृष्ठ 113।

(4) जी.के. चन्द्रौल, उपरिवत् पृ.301

(5) पाठक, उपरिवत्, पृ. 569

(6) पाठक, उपरिवत् पृ. 569

(7) पाठक ने भित्ति की मोटाई एक मीटर तथा ऊंचाई 1.70 मीटर दर्शाया है।

(8) जी.के. चन्द्रौल, उपरिवत्, पृ. 304

(9) नरेश कुमार पाठक, उपरिवत् , पृ. 570

(10) चन्द्रौल, उपरिवत्, पृ.303

(11) बी.डी.झा. उपरिवत् , पृ.113

(12) जी.के.चन्द्रौल, उपरिवत् पृ.304

(13) पर्शीब्राउन,इण्डियन आर्किटेक्चर "बुद्धिस्ट एंड हिन्दू", बाम्बे, 1976, पृ.53

(14) कृष्णदेव, "उत्तर भारत के मंदिर" नई दिल्ली, 1969,पृ. 16

(15) ए.के. कुमार स्वामी,"हिस्ट्री आफ इण्डियन एंड इण्डोनेशियन आर्ट" नं. 152, दिल्ली, मुंशीराम मनोहर लाल , 1972 पृ. 78 एवं प्लेट XXXVII .

◆◆◆